लेखक के बारे में

मराठी के आधुनिक नाटककारों में शीर्षस्थ विजय तेंदुलकर अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित एक महत्वपूर्ण नाटककार हैं। इनका जन्म 7 जनवरी 1928 को महाराष्ट्र में हुआ था। 50 से अधिक नाटकों के रचयिता तेंदुलकर ने अपने कथ्य और शिल्प की नवीनता से निर्देशकों और दर्शकों,दोनों को बराबर आकर्षित किया है। पूरे देश में इनके नाटकों के अनुवाद और मंचन हो चुके हैं। हिन्दी में इनके 30 से अधिक नाटक खेले जा चुके हैं। इनके कुछ बहुचर्चित नाटक हैं- 'खामोश अदालत जारी है', 'घासीराम कोतवाल', 'सखाराम बाइंडर', 'जाती ही पूछो साधू की', 'गिद्ध'। इनके अलावा उनकी कुछ प्रमुख नाट्य रचनाएँ हैं- 'अंजी', 'अमीर', 'कन्यादान', 'कमला', 'चार दिन', 'नया आदमी', 'बेबी', 'पंछी ऐसे आते हैं' इत्यादि । इन्हे कई कला सम्मानों से सम्मानित किया गया। जिनमे संगीत नाटक अकादमी सम्मान, कमलदेवी चट्टोपाध्याय सम्मान, नेशनल फिल्म सम्मान सर्वश्रेठ फिल्म संवाद फिल्म मंथन के लिए 1977 मे, फिल्मफेर सर्वश्रेठ फिल्म संवाद सम्मान फिल्म आक्रोश के लिए, फिल्मफेर सर्वश्रेठ कहानी सम्मान फिल्म आक्रोश के लिए, फिल्मफेर सर्वश्रेठ फिल्म संवाद सम्मान अर्ध सत्य फिल्म के लिए, पदमभूषण सम्मान, सरस्वती सम्मान, संगीत नाटक अकादेमी फेलोशिप सम्मान, कालिदास सम्मान, कथा चुड़ामनी सम्मान, लिटल मगजीन सलाम सम्मान प्रमुख हैं।

पात्र परिचय

मंच पर

नाम	पात्र
रहीश	सखाराम बाइंडर
अंकिता गुप्ता	लक्ष्मी
हनीश राजपूत	दाऊद
पारुल कौशिक	चम्पा
गौरव सक्सेना	चम्पा का पति

मंच परे

लेखक	विजय तेंडुलकर
निर्देशिका	कनिष्ठा पाठक
सह-निर्देशक	धीरज शर्मा
प्रकाश व्यवस्था	विक्रम मलिक
मंच परिकल्पक	राहुल शर्मा
रूपसज्जा	राजन शीला
वस्त्र विन्यास	किरण दत्त
संगीत निर्देशन	प्रदीप भाटिया
संगीत संचालन	दीपांश शर्मा
मंच प्रबन्धक	कमलजीत सिंह बिष्ट
नेपथ्य	अमित आहूजा, गौरव चौहान, हरुन अरोड़ा, विजय कुमार
मार्गदर्शन	रवि मोहन

विशेष आभार

श्री सुदेश शर्मा
(उपाध्यक्ष, हरियाणा कला परिषद, चंडीगढ़)
श्री रवि मोहन
(रंग निर्देशक)

सम्पर्क सूत्र: 97299.26160
Email: kanishthapathak@gmail.com

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
के सहयोग से तैयार की गई प्रस्तुति

सखाराम बाईंडर

दिनांक: 13 अक्तूबर, 2017 सायं 6:30 बजे
स्थान: भरतमुनि रंगशाला
मल्टीआर्ट कल्चर सैन्टर, कुरूक्षेत्र

लेखक: विजय तेंडुलकर
निर्देशिका: कनिष्ठा पाठक

नाटक के बारे में

श्रीमती सरोजिनी वर्मा द्वारा मराठी के वर्चस्वी नाटककार श्री विजय तेंडुलकर की अत्यंत विवादस्पद और बहुचर्चित कृति 'सखाराम बाइंडर' का सशक्त और प्राणवान अनुवाद, जिसने रंगमंच पर दांपत्य जीवन की गोपनीय नैतिकता का साहसपूर्ण ढंग से पर्दाफाश किया है । सरकारी नियंत्रण को चुनौती देकर उच्चतम न्यायालय से लेखकीय अभिव्यक्ति के आधार पर मान्यता पाने वाला अपने ढंग का अकेला और अनूठा नाटक है । 'सखाराम बाइंडर' को इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि वह गलाजत से भरी दिखावटी संभ्रांतता को पहली बार इतने सक्षम ढंग से चुनौती देता है । रटे-रटाये मूल्यों को सखाराम ही नहीं इस नाटक के सारे पात्र अपनी पात्रता की खोज में ध्वस्त करते चले जाते हैं । जिन नकली मूल्यों को हम अपने ऊपर आडम्बर की तरह थोप कर चिकने-चुपड़े बने रहना चाहते है, उसे सही-सही इस आइने में निर्ममता से उघडता हुआ देखते हैं । 'सखाराम बाइंडर' वही आइना है । भाषा के स्तर पर सारे पात्र बड़ी खुली और ऐसी बाजारुपन से संयुक्त भाषा का प्रयोग करते हैं जिन्हें हमने अकेले-दुकेले कभी सुना जरुर होगा । किन्तु उसे अपने संस्कारिता का अंश मानने में सदैव कतराते रहे हैं । पुरे नाटक में कथावस्तु की विलक्षणता न होते हुए भी पात्रों का आपसी संयोजन भाषा के जिस स्तर पर नाटककार ने किया है, वही नाटकीयता को उभारने में अदभुत रूप से सफल होता है ।

निर्देशकीय

सखाराम बाइंडर को मंचन के लिए चुनना अपने आप में ही एक चुनौती थी । सखाराम बाइंडर को विजय तेंडुलकर ने अपनी लेखनी से एक ऐसे पात्र के रुप में दिखाया है, जो गलाजत भरे समाज की दिखावटी जीवन शैली और संस्कारिता को चुनौती देता है जिन नकली मूल्यों को हम अपने ऊपर आडंबर की तरह थोपकर चिकने-चुपड़े बने रहना चाहते हैं, उस नकलीपन की पोल खोलता हुआ ये नाटक एक आईने की तरह दिखाई पड़ता है । सखाराम बाइंडर और उसके पात्र समाज के इसी नकलीपन को लोगों के सामने आईने की तरह प्रदर्शित करते है । नाटक की भाषा में यहाँ के लोगों की मानसिकता और समाज की संस्कारिता के हिसाब से कुछ बदलाव किए गए । लेकिन ये भी सुनिश्चित किया गया की यहाँ के दर्शक अपनी संस्कारिता के हिसाब से इसके मंचन को पचा सके और इसके साथ-साथ ये भी सुनिश्चित किया गया कि सखाराम बाइंडर के पात्रों व दृश्यों की आत्मा को खत्म किए बिना दर्शकों के सामने ज्यों का त्यों परोसा जाए । सभी नाटक समाज और दर्शकों को संदेश देने के लिए ही मंचित नहीं किए जाते अपितु कुछ नाटकों का मंचन समाज को आईना दिखाने के लिए भी किया जाता है और सखाराम बाइंडर उसी तरह का नाटक है ।

निर्देशिका के बारे में

कनिष्ठा के जीवन में अभिनय के अंकुर बचपन से ही अंकुरित होने लगे थे। कनिष्ठा के बाल्यकाल ने बचपन की अठखेलियाँ भी आरंभ की तो मंच पर ही चढ़ कर। कला इन्हे पिता के वात्सल्य रस के साथ -साथ प्राप्त हुई। इनके पिता प्रोफ़ेसर शर्मा जी भी आरंभ से ही मंच पर ही सक्रिय रहे हैं। कनिष्ठा ने अपने पिता एवं अपने अग्रजों को मंच साधना करते देखा तो उसके भीतर का कलाकार मंच से अछूता कैसे रह सकता था । कनिष्ठा का आरंभिक अभिनय शिक्षण केंद्र उसका पारिवारिक वातावरण ही रहा है। जहां से कण-कण, तृण-तृण ग्रहण कर आज वह एक समृद्ध अभिनेत्री के रूप में स्थापित हो चुकी है। “माटी रूदन करे” में कनिष्ठा ने मुख्य भूमिका निभाई एवं सर्वश्रेस्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार प्राप्त किया। वर्ष 2000 में कनिष्ठा ने पाली भुपिंदर द्वारा रचित एवं डॉ संजीव चौधरी द्वारा निर्देशित नाटक “जब में सिर्फ़ औरत होती हूँ” में कट्टर मुस्लिम औरत की भूमिका निभाई। कनिष्ठा को तीन बार सर्वश्रेस्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला। अगले वर्ष 2001 में कॉलेज द्वारा “शंकर शेष” का चर्चित नाटक “पोस्टर” मंचित किया गया । वर्ष 2002 में कनिष्ठा द्वारा “समाधि-सर्प” नामक नाटक प्रस्तुत किया गया । कुरुक्षेत्र विश्वविधयालय द्वारा आयोजित युवा उत्सवो में कनिष्ठा पाठक को लगातार तीन बार सर्वश्रेस्ठ अभिनेत्री चुना गया,जो अपने आप में विश्वविधयालय का एक रिकॉर्ड है। आज जब नाट्य-समीक्षक कनिष्ठा को मंच पर देखते हैं तो उसकी तुलना 'रोहिणी हटगड़ी' एवं 'स्मिता पाटिल' जैसी सशक्त अभिनेत्रियों से करते हैं । नाट्य निर्देशक डॉ संजीव कुमार का कहना है की मैंने अपने 20 वर्षों के रंगकर्म अनुभव में ऐसी अदभूत एवं विलक्षण अभिनय क्षमता और किसी मंचीय अभिनेत्री में नही देखी । कनिष्ठा ने विभिन्न नाटकों में अभिनय करते हुए क्षेत्रीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के उत्सवों में लगभग 32 पुरस्कार प्राप्त किए हैं। हरियाणा के महामहिम राज्यपाल माननीय बाबू परमानंद जी ने वर्ष 2000 में राजभवन चंडीगढ़ में आयोजित समारोह में राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित किया ।